दोहा

श्री सन्मति के जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीति।
"वृन्दावन" सो चतुर नर, लहैं मुक्ति नवनीत।।

इत्याशीर्वाद

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी। तुम में जितने गुण हैं तितनी।
कहि कौन सकै मुख सोंसब ही। तिहिं पूजत होंगहि अर्घ यही।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्ताभ्यों चतुर्विंशति जिनेभ्यों पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवित्त

ऋषभदेव को आदि अन्त, श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार।
तिनके चरण कमल को पूजैं, जो प्राणी गुणमाल उचार।।
ताके पुत्र मित्र धन जोबन, सुख समाज गुन मिले अपार।
सुरपद भोग भोगि चक्री व्है, अनुक्रम लहैं मोक्षपद सार।।

इत्याशीर्वाद।

श्री महावीर चालीसा

दोहा

सिद्धसमूह नमो सदा, अरू सुमरूं अरहन्त।
निर आकुल निर्बाच्छ हो, गये लोक के अन्त।।
मंगलमय मंगलकरन, वर्धमान महावीर।
तुम चिन्तत चिन्ता मिटे, हरो सकल भव पीर।।

चौपाई

जय महावीर दया के सागर, जय श्री सन्मति ज्ञान उजागर।
शान्त छवी मूरत अति प्यारी, वेष दिगम्बर के तुम धारी।
कोटिभानु से अति छवि छाजैं, देखत तिमिर पाप सब भाजै।
महाबली अरिकर्म विदारे, जोधा मोह सुभट से मारे।
काम क्रोध तजि छोड़ी माया, क्षण में मानकषाय भगाया।
रागी नहीं नहीं तू द्वेषी, वीतराग तू हित उपदेशी।

प्रभु तुम नाम जगत में सांचा, सुमरत भागत भूत पिशाचा।
राक्षस यक्ष डाकिनी भागे, तुम चिंतत भय को इन लागे।
महाशूल को जा तन धारे, होवे रोग असाध्य निवारे।
व्याल कराल होय फणधारी, विष उगले क्रोधित हो भारी।
महाकालसम करे डसन्ता, निर्विष करो आप भगवन्ता।
महामतगजमद को मारे, भगे तुरत जब तोहि पुकारे।
फार डाढ़ सिंहादिक आवे, ताको प्रभु तू शीर्घ भगावे।
होकर प्रबल अग्नि जोजारे, तुम प्रताप शीतलता धारे।
शस्त्रधार अरि युद्ध लड़न्ता, तुम दृष्टि हो विजय तुरन्ता।
पवन प्रचण्ड चले झकझोरा, प्रभु तुम हरो होय भय चोरा।
झारखण्ड गिरि अटवी मांही, तुम बिन शरण तहां कोउ नाहीं।
वज्रपात करि धन गरजावे, मूसलाधार होय तड़कावे।
होय अपुत्र दरिद्र सन्ताना, सुमरत होय कुबेर समाना।
बन्दीगृह में बंधी जंजीरा, कण्ठ-सुइन में सकल शरीरा।
राजदण्ड करि शूलि धरावें, ताहिं सिंहासन तुहीं बिठावे।
न्यायाधीश राज दरबारी, विजय करे हो कृपा तुम्हारी।
जहर हलाहल दुष्ट पियन्ता, अमृतसम प्रभु करो तुरन्ता।
चढ़े जहर जीवादि डसन्ता, निर्विष क्षण में आप करन्ता।
एक सहस बस तुमरे नामा, जन्म लिया कुण्डलपुर ग्रामा।
सिद्धारथ नृप सुत कहलाये, त्रिशलामात उदर प्रगटाये।
तुम जनमत भयो लोक अशोका, अनहद शब्द भयो तिहुं लोका।
इन्द्र ने नेत्र सहस्त्र करि देखा-गिरि सुमेर कियो अभिषेखा।
कामादिक तृषणा संसारी, तज तुम भये बालब्रह्मचारी।
अथिरजानजगअनित विसारी, बालपने प्रभु दीक्षा धारी।
शान्तभाव धर कर्म विनाशे, तुरतहिं केवलज्ञान प्रकाशे।
जड़ चेतन त्रय जग के सारे, हस्तरेखवत् आप निहारे।

बहुमत और कुशादी डण्डी, दियो न रहने इक पाखण्डी।
पंचमकाल विषें जिनराई, चांदनपुर प्रभुता प्रगटाई।

क्षण में तोपिन बाढ़ि हटाई, भक्तन के तुम सदा सहाई।
मूरख नर नहिं अक्षरज्ञाता, सुमरत पण्डित होय विख्याता।

सोरठा

करे पाठ चालीस दिन, नित चालीसहिं बार।
खेवे धूप सुगन्ध पढ़, श्री महावीर अगार।
जन्म दरिद्री होय अरु, जिसके नहीं सन्तान।
नाम वंश जग में चले, होय कुबेर-समान।

आरती श्री महावीर स्वामी

जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा।
वर्द्धमान महावीर वीर अति, जय संकट छेवा।। टेक ।।
सिद्धारथ नृप नन्द दुलारे, त्रिशला के जाये।
कुण्डलपुर अवतार लिया, प्रभु सुर नर हर्षाये।। ॐ जय...
देव इन्द्र जन्माभिषेक कर, उर प्रमोद भरिया।
रूप आपका लख नहिं पाये, सहस आंख धरिया।। ॐ जय...
जल में भिन्न कमल ज्यों रहिये, घर में वाल यती।
राजपाट ऐश्वर्य छोड़ सब, ममता मोह हती।। ॐ जय...
बारह वर्ष छद्मावस्था में, आतम ध्यान किया।
घाति-कर्म चकचूर, चूर प्रभु केवल ज्ञान लिया।। ॐ जय...
पावापुर के बीच सरोवर, आकर योग कसे।
हने अघातिया कर्म शत्रु सब, शिवपुर जाय बसे।। ॐ जय...
भूमंडल के चांदनपुर में, मंदिर मध्य लसें।
शान्त जिनेश्वर मूर्ति आपकी, दर्शन पाप नसें।। ॐ जय...
करुणासागर करुणा कीजे, आकर शरण गही।
दीन दयाला जगप्रतिपाला, आनन्द भरण तुही।। ॐ जय...